विद्यालय नेतृत्व: विद्यालय-समुदाय की साझेदारी स्थापित करना

हिन्दी

पहले जब यहाँ आये, तो विद्यालय की व्यवस्था भी कुछ अच्छी नहीं थी। जिसका भी प्रभाव यहाँ के बच्चों पे, और अभिभावकों के ऊपर पड़ रहा था।

उसके लिए हमने प्रयास ये किया कि BDO साहब से मिल के, एंजीनियर से मिल के, रात-रात उनको लेके, BDO साहब को, एंजीनियर को, आके, क्योंकि विद्यालय में हमारे सामने इतने गड्ढे, और इतना यहाँ ऊबड़-खाबड़ जंगल था, इसलिए भी कुछ अभिभावक यहाँ पर, अपने बच्चों को, भेजना पसंद नहीं करते थे।

तो उसके लिए हम BDO साहब और SDM साहब, ग्राम प्रधान, BDC सदस्य, Block प्रमुख, सबसे संपर्क करके, तब यहाँ पर जो है, गड्ढे पटवाए, और यहाँ की साफ-सफाई, विद्यालय का शुद्धिकरण, ये करवाया।

उसके बाद जाके, कुछ रुझान जो है, यहाँ के अभिभावकों का रुझान school के प्रति, समाज का रुझान school के प्रति, बढ़ पाया।

जब मैं यहाँ २००९ में आया था, उस समय विद्यालय में मुझे केवल नौ बच्चे मिले थे। यहाँ, इस विद्यालय में, छोटा सा गाँव है, तीन-सौ की आबादी है, जिसमें पाँच मॉन्टेसरी विद्यालय चल रहे हैं।

यहाँ के अभिभावकों का रुझान जो था, वो मॉन्टेसरियों की तरफ था। तो उसके लिए, जब मैं आया, तो नौ बच्चे ही मिले।

फिर उसके लिए, मैंने प्रयास किया, अभिभावकों से व्यक्तिगत रूप से, घर-घर जा के मिला।

और यहाँ जो ग्राम शिक्षा समिति थी, SMC थी, उसकी मीटिंगें बुलाई।

Meeting बुलाकर के, उनको मैंने समझाया, और उनसे ये कहा कि, "एक साल, मुझको बच्चों को देकर आप देखें! आप मॉन्टेसरी भेजते हैं, ठीक है, एक साल हमको दीजिए, और हमारी पढ़ाई और उनकी पढ़ाई में अंतर करिए! और अंतर करके उसके बाद देखिए कि, क्या आपको वहाँ से मिल रहा था? और क्या हमसे मिला?"

ये बराबर, ये मीटिंगें हर महीने दो मीटिंगें करते रहे, उनको समझाते रहे।

आभिभावकों का रुझान कुछ हमारी तरफ हुआ, बच्चे भेजने लगे!

एक साल का जब समय बीता, वहाँ का और यहाँ का माहौल देख के, तब से अभिभावकों का रुझान, हमारे विद्यालय की तरफ बढ़ा!

क्योंकि हम लोग जितने अपने staff में teachers हैं, वो प्रतिदिन एक कार्ययोजना, छुट्टी के बाद, ये

शुरु से ही जब से हम आए हैं, तबसे करते चले आ रहे हैं, कि अगले दिन हमको क्या करना है? क्या नई चीज़ बच्चों को बतानी है?

और उस चीज़ को बताने के लिए, हमको किस material और किस चीज़ की आवश्यकता पड़ेगी? उसकी व्यवस्था, हम तीन टीचरों में से कोई एक जो है, स्वत: ही करके लाता है!

ये शुरु से हमारी ये व्यवस्था चली आ रही है।

इसलिए जो भी teacher यहाँ आता भी है, तो उस माहौल में ढलने में उसको कोई दिक्कत नहीं होती। क्योंकि शुरु से हमारा ये माहौल चला आ रहा है। तो उसमें जो है, तुरंत, वो teacher ढल जाता है!

और daily की कार्ययोजना, हम अगले दिन, जो बनाते हैं, वहीं लागू करते हैं, विद्यालय में!